स्मरणीय

विश्व के विशालतम लोकतंत्र के संरक्षक माननीय जनप्रतिनिधि!

भारत की अखण्डता, एकताहेतु सन्नद्ध आप सबका ध्यान हम एक छोटी-सी भूल की ओरआकर्षित करने की अनुमति चाहेंगे। आप सबको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि भारत को आजादी किसने दिलायी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आप सबकेसत्प्रयासोंकोयहश्रेयजाताहै;किन्तु क्या कभी आपनेविचार किया किमहात्मागाँधी-जैसेदुबले-पतले व्यक्ति में इतना बल कहाँ से आ गया कि वह उन शक्तिशाली अंग्रेजों को परास्त करते, जिनके साम्राज्य में सूर्य डूबता ही न था?गाँधीजी नेकहाथाकिउनके पासजोबलहै,गीतामाताकाहै।

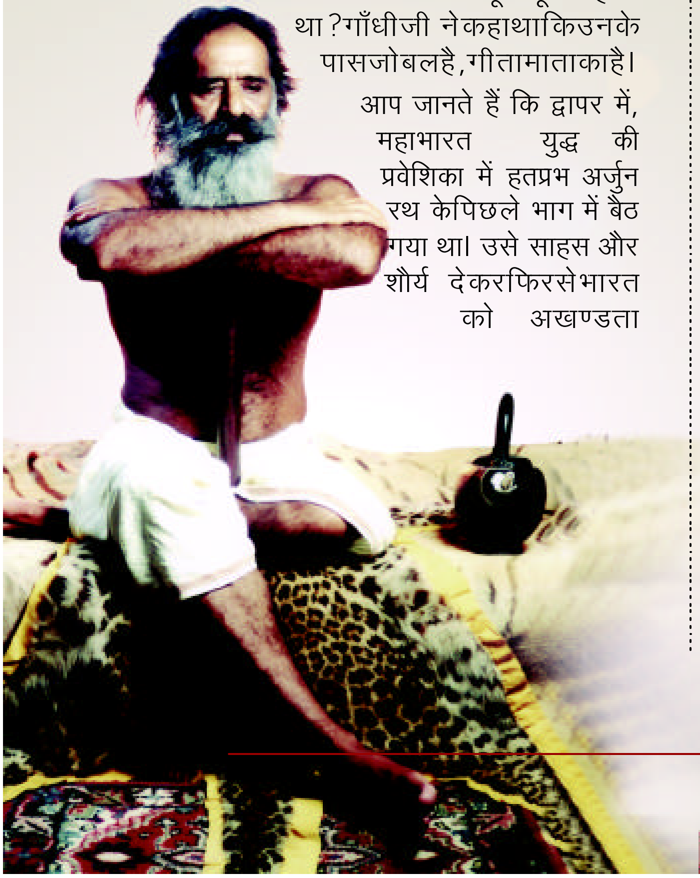

आप जानते हैं कि द्वापर में, महाभारत युद्ध की प्रवेशिका में हतप्रभ अर्जुन रथ केपिछले भाग में बैठ गया था। उसे साहस और शौर्य देकरफिरसेभारत को अखण्डता दिलायीतोश्रीकृष्ण-वाणीइसीगीताने।

आपको ज्ञात है कि सन् १८५७में भारत के इतिहास में पहली बार जनता ने शासकों के विरुद्ध तलवार उठाई, उन अंग्रेजों के विरुद्ध, जो भारतवासियों को जूतों की ठोकर से चलाते थे। जहाँ-जहाँ अंग्रेजों के खिलाफ आवाजें उठीं, उन्हें अंग्रेजों ने गोलियों से भून दिया। उनसभी शहीदों कीजिह्वापर एकहीमंत्रथा-कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।– कर्म करने में हीहमाराअधिकारहै,फलमेंकदापिनहीं।

क्रमशःदेशभक्तोंकोफाँसियाँहोनेलगीं।मंगल पाण्डेय, वीर सावरकर, खुदीराम बोस, सरदार भगत सिंह इत्यादि कितने ही ज्ञात और अज्ञात देशभक्त फाँसीके फन्दे पर झूल गये। उन सबके हाथों में गीता थी और जुबान पर था - 'वासांसि जीर्णानि यथाविहाय' अर्थात् शरीरएककवस्त्रहै।वस्त्रबदलकरहमफिरलौटेंगेऔर लड़ेंगे। तुम हमारी आत्मा को नहीं मार सकते-''नैनं छिन्दन्तिशस्त्राणि.......''

स्वतन्त्रता संग्राम केजितने भी वरिष्ठ नेता हुए, सबने गीता की अनुशंसा की।लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने गीता पर भाष्य लिखा। नेहरू जी ने गीता पर व्याख्यानदिए।आचार्य विनोबा भावे नेगीतापर टीका लिखी।अरबिन्दघोषनेगीताकेअनुरूपसाधनपरबल दिया। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन इत्यादि सबके हाथ में गीता और कंठ पर गीताकेश्लोकथे।

सन् १९३२-३३ में अंग्रेजों ने 'फूटडालोऔरराज्य करो' की नीति के अनुसार अछूतों के लिए पृथक् निर्वाचनप्रणालीतथाभारतकाएकखण्डअछूतिस्तान के नामसेबनाने का प्रस्ताव रखा, तो गांधी जी इसके विरोध में अछूतों कीझोपड़ियोंमेंकूद पड़े, वहाँसफाई

करने लगे, उनके साथ रोटीखाने लगे और बोले- ये सगे भाई हैं। कौन कहता है कि ये अछूत हैं? किसी शास्त्र में यह नहीं है कि मनुष्य भी अछूत होता है। गीता कहती है - 'ममैवांशो जीवलोके......' ''अर्जुन! जीव मेरा विशुद्ध अंश है।'' कैसे अछूत? हम सभी एक परमात्मा की सन्तान हैं, सगे भाई हैं। धीरे-धीरे गाँधीजी ने सबको अपने साथ कर लिया। उनके साथ पूरा भारत चलने लगा। अंग्रेजों की हिम्मत ही नहीं पड़ी कि गाँधीजी को छू दें।

गीता का ही सम्बल प्राप्त कर गाँधीजी ने भारत-जैसे राष्ट्र को स्वतन्त्रता के द्वार तक पहुँचाया। कृतज्ञताज्ञापन-हेतु सरकार ने उनका चित्र नोटों पर अंकित कराया, किन्तु उनकी एकता के मूलमंत्र गीता को भूल गये। धर्मनिरपेक्षता के भय से नेताओं ने गीता का नाम लेना भी बन्द कर दिया। जिस गीता ने स्वतन्त्रता संग्राम में हम सबको एकता के सूत्र में संगठित किया, जिसने भारत को स्वतन्त्रता दिलायी, जिसने अमीर-गरीब, ऊँच-नीच सबके लिए एक इष्ट तथा एक धर्म का उद्घोष किया, वही गीता आज भी भारत को कलह-भेदभाव-फूटमुक्त, अखंड, एकरस बनाये रख सकती है। जहाँ सुमति होती है, वहीं समृद्धि भी होती है। अतः प्रकारान्तर से गीता आपकी समृद्धि का सूत्र भी है

गीता एकता का ग्रन्थ है, परमश्रेय की प्राप्ति और लोक में समृद्धि का मंत्र है। गीता के अनुसार-'अपि चेत्सुदुराचारो' - अत्यन्त दुराचारी भी मुझे भजता है तो वह साधु मानने योग्य है। वह 'क्षिप्रं भवति धर्मात्मा'-शीघ्र धर्मात्मा हो जाता है। कौन? वही दुराचारी! अतः गीता दुराचारी और सदाचारी में दरार नहीं डालती, मनुष्य में वर्ग-भेद का सृजन नहीं करती।

एक परमात्मा का चिन्तन, गीता का शोध है। सुकरात, मूसा, ईसा, मुहम्मद अथवा पारसी धर्म के प्रणेता जरथुस्त्र इत्यादि सभी जो एक ईश्वर का उपदेश देते हैं, गीता के ही सन्देशवाहक हैं; क्योंकि गीताकाल में धर्म के नाम पर प्रचलित आज के मत-मतान्तरों में से कोई भी नहीं था। उस समय दुःखी मानव के लिए धरातल पर एक ही धर्म-संदेश था - गीता! अतः गीता को सम्मान देकर आप ईश्वर की प्रथम वाणी को उसके मूलरूप में स्वीकार कर रहे हैं।

आज भारत बिखरा-बिखरा है। निर्वाचन के अवसर पर यादव यादव को वोट देता है, चमार चमार को, ब्राह्मण किसी ब्राह्मण को, जो जैसा है उसी ओर भागता है। गीता को भूल जाने से यह भूल फिर हो रही है। कभी अंग्रेज अछूतिस्तान बना रहे थे तो आज भी कतिपय नेता अलगाववाद का स्वर अलाप रहे हैं। ऐसा केवल धर्म को न जानने के कारण है; क्योंकि केवल धर्म ही संसार को जोड़ता है, शेष व्यवस्थाएँ संसार को तोड़ती हैं। अंग्रेजों ने कहा था - जिन कबीलों में फूट है उनका भाग्य वे कौमें लिखती हैं जिनमें एकता है। अस्तु, एकतामूलक गीता को धर्मनिरपेक्षता के भ्रम में अब तक जो उपेक्षा मिली है उसका परिमार्जन कर लें।

सौभाग्य से इस शताब्दी के अंतिम महाकुंभ पर्व अप्रैल, १९९८ में हरिद्वार में महात्माओं के लाखों कैम्पों तथा करोड़ों श्रद्धालुओं की सभा के मध्य समस्त शंकराचार्यों, महामण्डलेश्वरों, ब्राह्मण महासभा और ४४ देशों के धर्मशील विद्वानों की उपस्थिति में 'विश्वधर्म संसद' द्वारा गीता को मानवमात्र का धर्मशास्त्र और उसकी विशुद्ध व्याख्या के रूप में 'यथार्थ गीता' को 'विश्व गौरव' से सम्मानित किया गया। अतः अब आपके समक्ष गीता को सम्मान देने में कोई रुकावट नहीं है। गीता धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का निरपेक्ष शास्त्र है।

जिंस प्रकार भारत का राष्ट्रीय पक्षी मयूर है क्योंकि भारत में जन्मा है, भारत का राष्ट्रीय पशु शेर है क्योंकि भारत में पाया जाता है, भारत में जन्मी और बहुसंख्यकों द्वारा बोली जाने के कारण भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, उसी प्रकार भारत का एक राष्ट्रीय शास्त्र भी होना चाहिए क्योंकि न केवल यह आपके पूर्वजों की सम्मानित धरोहर है, अपितु पूरे विश्व के मानव समाज से इसका कहीं से कोई विरोध नहीं है।

यदि गीता आपके माध्यम से प्रकाश में आती है तो आपका समग्र वैभव लौटआएगा, जगमगा उठेगा। इस सत्प्रयास के परिणामस्वरूप आपकी कीर्ति सदा-सदा के लिए अमर हो जायेगी। विश्व में प्रचलित समस्त धर्मों का उद्गम होने के कारण गीता को 'गीतामाता' का गौरव प्राप्त है। गीता का उद्‌भव स्थल होने के कारण भारत को भारतमाता का गौरव प्राप्त है।

यदि इस धराधाम के सपूतों ने इसे शास्त्र का सम्मान दे दिया तो आप भारत माता के आंचल की लाज सदा के लिए बचा सकेंगे और एकता, समृद्धि, चिरशक्ति, शान्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर सकेंगे। हर सपूत भारत की अखंडता चाहता है और यही आपकी अखंडता का अकाट्य शास्त्र है।